CHETANA
INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION (CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

ग्रामीण पत्रकारिता अवसर और चुनौतियां

डॉ. अशोक कुमार मीणा अतिथि व्याख्याता,
हरिदेव जोशी पत्रकारिता और जनसंचार विश्वविधालय, जयपुर, राजस्थान
Email: kumarashokam@gmail.com, Mobile: 9414222436
Address: C-123, Residential Colony, RIICO Area Kukas,
Delhi Road Jaipur, (Raj.) 302028

First draft received: 12.07.2023, Reviewed: 18.07.2023, Accepted: 26.07.2023, Final proof received: 30.08.2023

Abstract

भारत गांवों का देश है। शिक्षा के प्रसार के साथ अब गांवों में भी अखबारों और अन्य संचार माध्यमों की पहुंच हो गई है। अब गांव के लोग भी समाचारों में रुचि लेने लगे हैं। यही कारण है कि अब अखबारों में गांव की खबरों को महत्व दिया जाने लगा है। अखबारों का प्रयास होता है कि संवाददाता यदि ग्रामीण पृष्ठकभूमि का हो तो अधिक उपयोगी होगा। हर गांव एक खबर होता है और इस एक खबर के अंदर अनेक खबरें होती हैं। पत्रकार यदि समय समय गांव का दौरा करते रहें और वहां के निवासियों के निरंतर सम्पर्क में रहे तो उन के पास कभी खबरों का टोटा नहीं होगा। गांव के नाम पर कई पत्रकार नाक भौं सिकोड़ने लगते हैं मगर ऐसा ठीक नहीं। माना गांव में पत्रकारों को वह सब नहीं मिलता जो शहरों में मिलता है। अगर आपको गांव जाने का चस्का एक बार लग गया तो फिर आपके लेखन की दिशा ही बदल जाएगी। सामान्य रुटीन समाचारों के अतिरिक्त गांव में समाजिक सरोकारों से जुड़े ऐसे समाचार होते हैं जो पाठकों को नया अनुभव देते हैं। समय–समय पर गांवों में विभिन्न सरकारी योजनाएं चलती रहती हैं इन योजनाओं से गांवों में आए बदलाव के साथ साथ योजना में भ्रष्टा चार के समाचार भी गांव के हित में होते हैं। अगर इन योजनाओं पर पत्रकार पैनी नजर रखेंगे तो योजना का जो लाभ मिल रहा है वह और अधिक मिलने लगेगा क्योंकि जब योजना लागू करने वालों को पता चलेगा कि इस पर पत्रकार की नजर है तो वह गलत काम करने से पहले सोचेगा और गलत काम करने से बचेगा। इस प्रकार गावों की खबरों का महत्तव स्वतः ही लगातार बढते जाने लगा है।

Keywords: ग्रामीण जीवन, संचार, बदलाव, ग्रामीण धुरी, जनरुचि, ग्रामीण पत्रकारिता, ग्रामीण रिपोर्टिंग आदि.

Introduction

ग्रामीण पत्रकारिता, मतलब गांवों की पत्रकारिता। अर्थात ऐसी पत्रकारिता जिसमें 40 प्रतिशत से अधिक सामग्री ग्रामीण विषयों से संबंधित हो, उसे ग्रामीण पत्रकारिता कहा जाता है। अतः ग्रामीण पत्रकारिता के तहत वे तमाम विषय और उन्हें तवज्जों देने वाले पत्र और पत्रकार होंगे जिनका सरोकार ग्रामीण जीवन से होगा। आजकल पत्रकारिता करते समय देखा गया कि हिंदी और अंग्रेजी के बड़े अखबारों में एक पत्रकार ऐसा भी रखने का चलन है जो खेती किसानी के बारे में विशेष योग्यता रखता हो। समय–समय पर इनकी रिपोर्ट अखबारों में छपती रहती है। इस प्रकार के समाचार न केवल किसान या गांव के लोग पढ़ते हैं बल्कि शहरी पाठक और अन्य पत्रकार भी ऐसे समाचारों का अध्ययन कर अपनी जानकारी में इजाफा करते देखे गए हैं। पत्रकारों के लिए खेती किसानी की रिपोर्टिंग में पर्याप्त अवसर है बशर्ते कि इनका लाभ उठाया जाए।

ग्रामीण पत्रकारिता का इतिहास बहुत पुराना तो नहीं किन्तु अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण है। समय और सामाजिक व राजनैतिक परिस्थितियों दोनों के अनुसार पत्रकारिता के उद्देश्य एवं विषय वस्तु परिवर्तित होते रहे है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व की पत्रकारिता में अधिकांश का उद्देश्य राजनीतिक चेतना जागृत करना था। व्यवसायिकता की पूट उस समय की पत्रकारिता में नहीं होती थी या कम होती थी। समय बदलने के साथ–साथ ग्रामीण पत्रकारिता के भी तेवर बदले, कलेवर बदला, व्यवसायिकता बढ़ी। व्यवसायिकता की अपनी अनिवार्य शर्तों को पूरा करते हुए आज पाठकों की रूचि बनाएं रखने का प्रयास है।

खबरों की दुनिया में मुख्यधारा की पत्रकारिता की अपनी अलग चुनौतियां तो हैं ही, लेकिन इन सब से परे देखा जाय तो पत्रकारिता में ग्रामीण इलाकों में भी चुनौतियां कुछ कम नहीं हैं। ग्रामीण पत्रकारिता बहुत आसान नहीं है। संसाधनों की कमी से जूझते ग्रामीण पत्रकार की चुनौतियों में से सबसे बड़ी चुनौती अनियमित पारिश्रमिक है। कई बार तो इन पत्रकारों को दो जून की रोटी जुटाना भी मुश्किल हो जाता है। इसलिए गांवों में जो भी लोग पत्रकारिता से जुड़े हैं, वे कोशिश करते हैं कि उनके पास आय के दूसरे स्रोत भी हों ताकि परिवार का खर्च चलाने में मुश्किलें न आएं। ग्रामिण पत्रकारिता में पत्रकारों की अनियमिता या मामूली पारिश्रामिक और बिना किसी पहचान के काम करते जाना उनकी नियति बन गई है। ग्रामीण पत्रकारों के लिए दो जून की रोटी जुटाने के साथ पत्रकारिता के प्रति अपना जुनून बरकरार रख पाना काबिल– ए –तारीफ के साथ मुश्किल भी होता जा रहा है। इसलिए वे खेती जैसे आजीविका के दूसरे साधनों पर भी निर्भर रहते हैं वरना उनके लिए अपना परिवार चलाना भी मुश्किल ही नहीं नामुमकिन हो जाएगा। पत्रकारिता चुनौतियों को बढ़ाता हैं। पत्रकारों पर अलग–अलग तरह से स्थानीय राजनीतिक दबाव होता है, इसलिए हमारे लिए सुरक्षा एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। गाँवों में पत्रकार जब किसी खबर की छानबीन करता है तब जाति और आर्थिक स्थिति जैसे तमाम तत्व काम करते हैं। 'मामलों का अतिसंवेदनशील होना भी ग्रामीण पत्रकारों के लिए बड़ा मसला है।

भारत में पत्रकारिता का प्रारंभिक चरण ग्रामीण पत्रकारिता को ही माना जाता है। उस समय वह लक्ष्य, उद्देश्य और मिशन की पत्रकारिता थी। लेकिन आज पत्रकारिता पूरी तरह से व्यवसायिक हो गई है। अब पत्रकारिता का उद्देश्य मिशन नहीं कमीशन हो गया है। लेकिन इस व्यवसायिक पत्रकारिता के विस्तार ने एक बार पुनः ग्रामीण पत्रकारिता को भी अपनाया है। एक समय था जब समाचार सिर्फ शहरों तक सीमित रहते थे गांव की तरफ कभी कबार ही

समाचार पत्र–पत्रिकाओं की नजर जाया करती थी वह भी अपने पत्र–पत्रिका के प्रसार को बढ़ाने या बरकरार रखने के लिए। टेलीविजन की तो यह हालत थी कि कभी गांव देहात की खबर आ गई तो गांव का भाग्य समझा जाता था। पूंजीगत लाभ नहीं मिलने के कारण या दर्शकों की कमी होने के कारण समाचार चैनलों में भी गांव की ओर रुख नहीं किया। पर जैसे–जैसे विकास हुआ वैसे– वैसे टीवी चैनलों की सोच भी बदली और समाचार पत्र संस्थानों का नजरिया भी बदला। ग्रामीणों की क्रय शक्ति में वृद्धि के कारण बाजार की पहुंच भी तेजी से हुई है। आज यह स्थिति है कि हर कोई गांवो की ओर देख रहा है। टीवी चैनलों में राष्ट्रीय चैनलों के साथ क्षेत्रीय चैनल भी खुल रहे हैं। बिजनेसमैन गांव की ओर आकर्षित हो रहे हैं ।अखबार ग्रामीण संस्करण निकाल रहे हैं। शहर के शोर से दूर लोग गांवों में जमीन लेकर शांति से रहना पसंद कर रहे हैं। सड़के गांवों से जुड़ रही है। खरीद–फरोख्त में बिचौलिया कम होते जा रहे हैं।ऑनलाइन शॉपिंग गांव तक डिलीवरी देने की होड़ में लग गए हैं । औसतन कहे तो गांव बदल रहे हैं। गांव अब पिछड़े गांव नहीं रह गए । पत्रकारिता में भी पिछले कुछ वर्षों से भारी परिवर्तन देखने को मिला, जहां एक और आज से कई वर्ष पहले पत्रकारिता एवं जनसंचार के दो –चार संस्थान हुआ करते थे वहां आज के समय लगभग हर बड़े शहर में पत्रकारिता संस्थान है। और समय के साथ इन बड़े मीडिया संस्थानों में ग्रामीण पत्रकारिता को भी महत्व दिया जाने लगा है। ऐसे में अब ऐसे पत्रकारों की भी आवश्यकता पड़ने लगी है जिन्हें ग्रामीण पत्रकारिता की समझ हो।

पत्रकारिता का अपना जुनून है। जोखिम भरा कैरियर होने के बावजूद युवा इस क्षेत्र में आकर देश की सेवा करते हैं। पत्रकारिता की बढ़ती मांग और पूर्ति से पत्रकारिता जगत में नए आयाम खुले हैं। जैसे राजनीतिक पत्रकारिता, खेल पत्रकारिता, सांस्कृतिक पत्रकारिता ,पर्यावरण और फोटो पत्रकारिता आदि के साथ ही ग्रामीण पत्रकारिता भी प्रमुख रूप से उभरी है। ऐसे में पत्रकारिता के विद्यार्थियों और युवा पत्रकारों के लिए कैरियर के नए अवसर खुले हैं। आज ग्रामीण पत्रकारिता का महत्व यह है कि देश की राजनीति में ग्रामीण मुद्दों पर चुनाव लड़ा जाने लगा है। इसमें शौचालय, पेयजल, हैंड पंप, किसानों से संबंधित मामले आदि शामिल है। यही कारण है कि अब पत्रकारों का रुझान ग्रामीण पत्रकारिता की ओर बढ़ रहा है। यहां सम्मान ज्यादा है। जितना शहर में पत्रकारों को सम्मान की नजरों से देखा जाता है उससे कहीं ज्यादा ग्रामीण क्षेत्र में पत्रकारों का सम्मान है। ग्रामीण पत्रकारिता का भविष्य अन्य पत्रकारिता के क्षेत्रों से ज्यादा है। ग्रामीण विकास के लिए यह अच्छी बात है और इसे यूं ही बढ़ते रहना चाहिए।

भारत एक विशाल जनसंख्या वाला देश है जिसका एक बहुत बड़ा भाग आज भी गांव में निवास करता है। वर्तमान में समय के साथ–साथ ग्रामीण पत्रकारिता को नाम तो मिला लेकिन संसाधनों की कमी से ग्रामीण पत्रकार जूझते रहते हैं। ग्रामीण इलाकों में पत्रकारों के लिए सबसे बड़ी चुनौती अनियमित व कम वेतन है। जिसके चलते इन पत्रकारों को अपनी गृहस्थी चलाना भी मुश्किल हो जाता है। इसलिए ग्रामीण के जो भी लोग पत्रकारिता से जुड़े होते हैं वह अपनी आय के दूसरे स्रोत भी रखते हैं ताकि परिवार का खर्च चलाने में मुश्किलें ना आएं। ऐसे कहने को तो पत्रकारिता को देश का चौथा स्तंभ माना जाता है किंतु पत्रकारों को जिस प्रकार की असुविधा का सामना करना पड़ता है उससे ना तो देश मजबूत होगा और ना ही पत्रकारों का परिवार,आएंगी तो सिर्फ सामाजिक सुरक्षा की दरारें। पत्रकारिता के क्षेत्र में इस तरह के कई उदाहरण मौजूद हैं जहां ग्राउंड रिपोर्टिंग के दौरान ग्रामीण पत्रकारों को लोगों का सहयोग नहीं मिलता है। हालात ऐसे हो जाते हैं कि उनका मेहनताना तक मिलना मुश्किल हो जाता है। गांव की कई ऐसी खबरें होती है जो राष्ट्रीय स्तर की बनती है। यह सब ग्रामीण पत्रकारों के कारण ही मुमकिन हो पाता है। लेकिन उनको इसके लिए कोई श्रेय भी नहीं मिलता है। राष्ट्रीय स्तर पर महत्व रखने वाली खबर पर भी छोटे पत्रकारों का नाम तक नहीं होता, जो उस खबर को सबसे पहले उठाते हैं। इसके अलावा ग्रामीण पत्रकारों पर संपादक का लगातार दबाव बना रहता है। हालांकि ग्रामीण पत्रकारों को उनकी कला और टैलेंट के आधार पर शोहरत पाने के लिए भी लंबी लड़ाई लड़नी है तब तक के लिए ग्रामीण भारत के पत्रकारों को ऊपरी दबाव, जात–पात, राजनीति और गरीबी से लड़ना होगा।

निष्कर्ष

भारत गांवों का देश है, हमको यह मानने में संकोच नहीं होना चाहिए। यह भी सत्य है कि भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार कृषि, पशुपालन, तथा प्राकृतिक संसाधन आदि है। जबकि यह सब ग्रामीण धुरी पर केंद्रीत है तब उन गांवों की उपेक्षा कर उसके सारे संसाधनों से कमाई करके शहरों को बसाने या विकास करने में खर्च क्यों किया जा रहा है? क्या अपनी ही कमाई पर गांवों को विकास के लिए हाथ फैलाने की जरूरत पड़ेगी। लेकिन ऐसा हो रहा है। ठीक है शहरों का विकास होना चाहिए लेकिन गांवों की उपेक्षा करके नहीं। ग्रामीणों के सपनों को कुचल कर नहीं। शहरों और गांवों के बीच का अंतर जब तक समाप्त नहीं होगा भारत के विकसित होने की कल्पना करना खुली आंखों से सपने देखने जैसा ही होगा। ग्रामीण विकास की अनेकों चुनौतियां हैं जिन्हें दूर किया जाना आवश्यक है। आजकल पत्रकारिता करते समय देखा गया कि हिंदी और अंग्रेजी के बड़े अखबारों में एक पत्रकार ऐसा भी रखने का चलन है जो खेती किसानी के बारे में विशेष योगयता रखता हों समय समय पर इन की रिपोर्ट अखबारों में छपती रहती हैं। इस प्रकार के समाचार न केवल किसान या गांव के लोग पढ़ते हैं बल्कि शहरी पाठक और अन्य पत्रकार भी ऐसे समाचारों का अध्ययन कर अपनी जानकारी में इजाफा करते देखे गए हैं। पत्रकारों के लिए खेती किसानी की रिपोर्टिंग में पर्याप्त अवसर हैं बशर्ते कि इनका लाभ उठाया जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मिश्र कैलाश, आओ गांव चले, जयपुर, पत्रिका प्रकाशन, 1997
2. यादव, रामजी, ग्रामीण विकास, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, 2003
3. कटारिया, सुरेन्द्र एवं तैद गुडजन, भारत में ग्रामीण विकास रणनीतियाँ एवं चुनौतियाँ, मलिक एण्ड कम्पनी, जयपुर, 2008
4. भानावत, डॉ . संजीव, विकास एवं विज्ञान संचार, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर , 2010
5. पटैरिया, मनोज, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2010
6. सिंह, कटार, ग्रामीण विकास सिद्धान्त, नीतियाँ एवं प्रबन्ध, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2011
7. https://wwwgraminmediacom.blogspot.com
8. https://graminmedia.in